क्षत्रिय वीर वीरांगनाएं

आप सभी आदरणीय बंधुओ को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !!

हम सभी कैलेंडर वर्ष 2021 को अलविदा कह चुके है और 2022 का पूर्ण ऊर्जा के साथ स्वागत कर रहें है।

इस नववर्ष में हम सभी संकल्प लेते है की अपनी संस्कृति और विरासत को सहेजने में समर्पित रहेंगे, इतिहास की बहुत सी ऐसी घटनाएं है जो शायद किसी ना किसी कारण से विलुप्त हो चुकी है या कर दी गई है, उन्हे इस कैलेंडर वर्ष में पुनः स्थापित करने का संकल्प लेते है।

भारत अपने आप में वृहद इतिहास को समाहित रखे हुए है, हमारे महापुरुषों का गौरवशाली इतिहास हमें आज भी गौरवान्वित करता है, हम संकल्पबद्ध है इस इतिहास को हमारी आगामी पीढ़ियों तक पहुंचाएंगे।

भारत निरंतर आगे बढ़ रहा है यहां के ऊर्जावान युवा नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहें है, हम सभी पर इतिहास को सहेजने के साथ-साथ भारत के भविष्य को वैश्विक पटल पर लेकर जाना है, हमें भारत को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लेना है, आज भारत वैश्विक शक्ति बन रहा है और अर्थव्यवस्था के मामले में भी हम अग्रणी देशों में खड़े है, यह वर्ष भारत को नई दशा और दिशा प्रदान करेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

आइए हम सभी मिलकर भारत के स्वर्णिम इतिहास को सहेजते हुए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प को पूर्ण करने हेतु यह वर्ष समर्पित करते हैं।

भारतवर्ष में समय-समय पर क्षत्रियों ने अपना बलिदान दिया है, सदियों से इस धरा की रक्षा की है, उन्हीं में से कुछ महान वीरो व वीरांगनाओं की वीर गाथाएं इस कैलेंडर में है जो निम्न है-

धन्नजय सिंह खींवसर

www.dhananjaisingh.com

वीर योद्धा राव जैता, कूंपा, पंचायण जी

बात 1541 ईस्वी की है जब दिल्ली में सूरी वंश के शेरशाह सूरी का शासन था।
शेरशाह वो अफगान आक्रांता था जिसने तत्कालीन मुगल बादशाह हुमायूं को खदेड़ कर दिल्ली के शासन पर कब्जा कर लिया था। शेरशाह को पता था कि जब तक राजपूताना के शौर्य को कुचला नहीं जाएगा तब तक दिल्ली की गद्दी को बरकरार रखना उसके बस की बात नहीं है। अपने खूनी साम्राज्य विस्तार के मंसूबे के साथ शेरशाह मेड़ता के रास्ते होता हुआ सुमेल आ पहुंचा। शेरशाह का इरादा मारवाड़ फतेह करना था लेकिन शायद उसे ये पता नहीं था कि इस बार उसकी तोपों का मुकाबला राजपूताना की तलवारों से होगा। इन तलवारों के बारे में कहा जाता है कि एक बार तलवार म्यान से निकली तो यह दुश्मनों का सिर काटकर ही म्यान में जाती है अथवा वीर योद्धाओं के साथ सदैव-सदैव के लिए मातृभूमि की गोद में फना हो जाती है।

इस गिरी-सुमेल की धरती को भी इस बात का अहसास नहीं था कि उसे ऐसे विलक्षण युद्ध की गवाही देनी होगी जो अपने आप में अलग मायनों में अनोखा होगा। कहने के लिए तो ये युद्ध मारवाड़ के शासक राजा राव मालदेव जी और दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूरी की सेनाओं के मध्य लड़ा जाना था, लेकिन ये युद्ध मारवाड़ की सेना ने बिना राजा के ही लड़ा था।

बात सन् 1544 की है कई महिनों तक सुमेल में डेरा डाले बैठे शेरशाह की सेना को समझ नहीं आ रहा था कि राजपूताना के वीरों का मुकाबला कैसे किया जाये। शेरशाह के पास 80 हजार सैनिकों की सेना थी और 40 तोपें थी तो दूसरी तरफ गिरी में डेरा डाले राव मालदेव जी के पास महज 15 हजार सैनिक ही थे। 4 जनवरी 1544 को शेरशाह ने राव मालदेव जी के खेमे में जाली पत्र डलवा दिए जिससे राव मालदेव जी को लगा कि उनके सरदार उन्हें धोखा देंगे इसलिए अचानक मारवाड़ के शासक राव मालदेव जी ने युद्ध क्षेत्र छोड़ने का ऐलान कर दिया। सेना को वापस मारवाड़ लौटने का फरमान सुनाया गया,लेकिन मारवाड़ की सेना के सेनापति जैता जी राठौड़ ,कूंपा जी राठौड़ और खींवसर के राव पंचायण जी कर्मसिहोत अपने राजा की इस बात से इत्तेफाक नहीं रखते हुए युद्ध क्षेत्र को नहीं छोड़ने का ऐलान करते हुए युद्ध का शंखनाद कर दिया। राव मालदेव जी अपने 5 हजार सैनिकों के साथ मारवाड़ के लिए रवाना हो गए। राजपूताना की आन, बान और शान को बचाये रखने का जिम्मा अब जैता जी,कूंपा जी और पंचायण जी पर था, रात के अंधेरे में जैता जी,कूंपा जी और पंचायण जी के साथ 10 हजार सैनिकों ने सुमेल की तरफ कूच किया, 5 जनवरी 1544 की सुबह सुमेल की धरती पर भीषण युद्ध हुआ। शेरशाह सूरी को यकीन था कि उसका तोपखाना और 80 हजार सैनिक राजपूताना के 10 हजार सैनिकों को देखते ही देखते कुचल कर रख देंगे।

युद्ध भूमि में अफगान तोपों का मुकाबला राजपूतों की तलवारों से था। राजपूताना के वीर तुफान बनकर शेरशाह की सेना को वैसे ही समाप्त कर रहे थे जैसे कोई जलजला बड़े जंगल को जलाकर रख देता है। सुमेल में जिस स्थान पर आज तालाब है उस स्थान पर कुछ नजर आता था तो केवल अफगान सैनिकों की लाशें या फिर खून का तालाब। मुकाबला हुआ तो बताते हैं कि जैता जी और कुंपा जी और पंचायण जी की सेना ने शेरशाह की सेना में ऐसी तबाही मचाई कि एक वक्त ऐसा भी आया जब शेरशाह खुद अपने घोड़े की जीन कसकर युद्ध भूमि से भागने को तैयार हो गया था। और इसी बीच उसके सेनापति खवास खान ने खबर दी कि जैता जी,कुंपा जी और पंचायण जी मारे गये हैं। और उसकी सेना ने भयंकर नुकसान झेलकर आखिरकार जंग जीत ली है। तब कहीं जाकर शेरशाह सुरी ने राहत की सांस ली।
जोधपुर के सेनापति जैता जी,कूंपा जी और पंचायण जी ने युद्ध में अपने दस हजार राजपूत सैनिकों के साथ बलिदान होने से पहले शेरशाह सूरी की 80 हजार फ़ौज के 40 हजार सैनिको को यमलोक पहुँचा दिया था।

जोधपुर की ख्यात के अनुसार जब रणखेत हुए वीरवर पंचायण जी के शरीर के घावों को गिना गया तो उनकी संख्या 120 थी।
इस युद्ध मे मारवाड़ के वीरो की वीरता देखकर शेरशाह अचंभित था, जब उनके शव उठाये जा रहे थे तो कहा जाता है कि पंचायण जी के शरीर को हाथी के द्वारा उठवाया गया था।

तारीख-ए-दाउदी में जिक्र मिलता है कि जैता जी, कूंपा जी और पंचायण जी की बहादुरी को देखकर शेरशाह सूरी के मुँह से सहज ही ये वाक्य निकल गया कि 'मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए दिल्ली की सल्तनत खो बैठता।'
"बोल्यो सूरी बैन यूँ गिरी घाट घमसाण , मुठी खातर बाजरी खो देतो हिंदवाण।"
इतिहास में जैता जी, कूंपा जी और राव पंचायण जी की वीरता हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गई। एक बार फिर सिद्ध हो गया कि राजपूत पैदा ही बलिदान देने के लिए होते हैं। ये एक ऐसा युद्ध था जिसने दिल्ली ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान में ये मुनादी करा दी थी कि संख्या बल के आधार पर राजपूतों से युद्ध नहीं जीता जा सकता।
इस युद्ध मे राव जैता जी पंचायणोत बगड़ी, राव कूंपा जी मेहराजोत मांडा, राव पंचायण जी कर्मसिहोत खींवसर, राव खींवकरण जी उदावत जैतारण, अखैराज जी सोनगरा रणधीरोत पाली, राव भदाजी पंचायणोत, बालेचा सुराजी बाली, राव जैतसी जी उदावत कुशालपुरा,अखेराज जी बनावत देवड़ा आदि ऐसे वीर योद्धा थे जो तूफानों का भी रुख मोड़ देते थे।

जगदंब

2022
JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5 Giri Sumel Battle Day	6	7	8
9	10	11	12	13	14 Makar Sankrati Pongal	15
16	17	18	19 Maharana Pratap Death Anniversary	20	21	22 Thakur Roshan Singh Jayanti
23	24	25 Pujay Shri Tan Singh Jayanti	26 Republic Day	27	28	29
30	31					

www.dhananjaisingh.com

सहल कंवर हाड़ी रानी

हाड़ी रानी सहल कंवर बूँदी के हाड़ा शासक की बेटी थी, जिनका विवाह मेवाड़ के सलुम्बर के सरदार राव रतन सिंह चुण्डावत से हुई था।

सहल कंवर को इतिहास में हाड़ी रानी के नाम से जाना जाता है। हाड़ी रानी एक ऐसी वीरांगना थी जिन्होंने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने पति को अपना कर्तव्य याद दिलाने के लिए अपना मस्तक ही काटकर पेश कर दिया था, ताकि उनके पति अपनी नई-नवेली दुल्हन के मोहपाश में बंधकर अपने राष्ट्र धर्म से विमुख ना हो जाए।

यह उस समय की बात है जब मेवाड़ पर महाराणा राज सिंह (1552-1680 ई०) का शासन था। इनके सामन्त सलुम्बर के राव रतन सिंह चूंडावत थे। जिनकी हाल ही में बूँदी के हाड़ा सरदार की बेटी सहल कंवर से विवाह हुआ था।
हाड़ी रानी सहल कंवर के विवाह को अभी कुछ ही समय हुआ था और अभी तक उनके हाथों की मेहंदी भी नहीं छूटी थी। तभी उसी समय उनके पति को युद्ध पर जाने का फरमान आ गया। जिसमे महाराणा राज सिंह ने रतन सिंह चुण्डावत को दिल्ली से औरंगजेब की सहायता के लिए आ रही अतिरिक्त सेना को रोकने का निर्देश दिया था।
अभी उनके विवाह को कुछ समय ही हुआ था और पत्नी से बिछड़ने की घड़ी आ गई थी। कोई नहीं जानता था कि युद्ध में क्या होगा परन्तु एक बात स्पष्ट थी कि राजपूत हमेशा रणभूमि में अपने शीश का मोह त्यागकर ही उतरता है, और जरूरत पड़ने पर शीश कटाने से भी पीछे नहीं हटता। जब औरंगजेब की सेना तेजी से अजमेर की ओर बढ़ रही थी तब महाराणा राज सिंह ने अपनी सेना को युद्ध की तैयारी तथा अपने सभी सामंतों को युद्ध क्षेत्र में पहुंचने का आदेश दे दिया था।

रतन सिंह चुण्डावत के विवाह को अभी कुछ ही समय हुआ था इसलिए उनके मन में युद्ध को लेकर अरुचि उत्पन हो गई थी। जब य़ह बात उनकी रानी सहल कंवर को पता चली कि चुण्डावत सरदार के मन में युद्ध के प्रति अरुचि है,तब उन्होंने अपने स्वामी को उनके कर्तव्यों का बोध करवाते हुवे युद्ध में जाने के लिए तैयार किया, तथा उनके लिए विजयश्री की कामना के साथ उन्हें युद्ध के लिए विदाई दी। चुण्डावत सरदार अपनी सेना लेकर युद्ध के लिए चल पड़े तथा जाते समय उन्होंने अपने सेवक के द्वारा रानी के पास एक पत्र भिजवाया।

पत्र में रतन सिंह लिखते हैं कि प्रिय अपनी कोई प्रिय निशानी (सेनाणी) भिजवा दो जो मुझे आपका स्मरण करवाती रहे। पत्र पढ़कर हाड़ी रानी सोच में पड़ गयी कि अगर उनके स्वामी इसी तरह उनके मोह से घिरे रहे तो शत्रुओं से कैसे लड़ेंगे।

तब उन्होंने संदेशवाहक को वापस एक पत्र चुण्डावत सरदार को देने के लिए कहते हुए कहा की मैं तुम्हें अपनी जो निशानी दे रही हूँ, इसे थाल में सजाकर मेरे स्वामी के पास पहुंचा देना, किन्तु याद रखना कि उनके सिवा इसे कोई और न देखे।

पत्र संदेशवाहक को देकर अगले ही क्षण हाड़ी रानी ने अपनी कमर से तलवार निकाली और एक ही झटके में अपना शीश धड़ से अलग कर दिया। य़ह देख संदेश वाहक की आंखों से आंसू निकल पड़े तथा उसने स्वर्ण थाल में हाड़ी रानी के कटे शीश को सुहाग के चूनर से ढक कर भारी मन से चुण्डावत सरदार की ओर दौड़ पड़ा। सर्वप्रथम उसने पत्र चुण्डावत सरदार को सौंपा, हाड़ी रानी ने पत्र में लिखा था "प्रिय मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूँ, आपको मेरे मोह के बंधनों से आजाद कर रही हूँ, अब आप बेफिक्र होकर अपने कर्तव्य का पालन करना, मैं स्वर्ग में आपकी बाट जोऊँगी"

पत्र को पढ़कर चुण्डावत सरदार ने संदेश वाहक को उत्तेजित स्वरों पूछा कि रानी ने तुम्हें क्या निशानी दी.?
संदेशवाहक ने कांपते हुवे हाथों से थाल उनकी और बढ़ा दिया,चुण्डावत सरदार फटी आंखों से हाड़ी रानी के शीश को देखता रह गये। उनके मोह ने उनसे उनकी सबसे प्रिय चीज छीन ली थी। अब उनके पास जीने को कोई औचित्य नहीं बचा था। उन्होंने मन ही मन कहा,
"प्रिये मैं भी तुमसे मिलने आ रहा हूं”

चुण्डावत सरदार के मोह के सारे बंधन टूट चुके थे, अब वह रानी के शीश को गले मे बांधकर युद्ध क्षेत्र के लिए निकल पड़े थे। रतन सिंह चुण्डावत उस युद्ध मे इतना अप्रतिम शौर्य दिखाया था कि उसकी मिसाल ढूंढ पाना बड़ा कठिन है। उन्होंने औरंगजेब की सेना को अजमेर की घाटी से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया, तथा पूरे रणक्षेत्र को मुगल सेना की लाशों से पट दिया, तथा वीरगति को प्राप्त हुवे। युद्ध में महाराणा की सेना की विजय हुई।
इस विजय का श्रेय रतन सिंह के शौर्य के साथ-साथ हाड़ी रानी सहल कंवर के उस बलिदान को भी जाता है जो अब तक के इतिहास का सबसे बड़ा अविस्मरणीय बलिदान है।
हाड़ी रानी की वीरगाथा वाकई मे लोगों को प्रेरणा देने वाली है एवं त्याग और बलिदान की भावनाओ को जगाने वाली है। हाड़ी रानी ने अपने स्वामी को युद्ध के लिए न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि एक ऐसा बलिदान दिया जिसे शायद ही कोई बहादुर से बहादुर व्यक्ति भी करने की जहमत न उठाए पाए।
इस तरह हाड़ी रानी ने त्याग और बलिदान देकर अपने सतीत्व को उजागर किया, इसके साथ ही वीरांगना हाड़ी रानी ने इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, उनके द्वारा मातृभूमि की रक्षार्थ दिय गए त्याग और बलिदान को हमेशा याद किया जाएगा।

2022
FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5 Basant Panchami
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16 Hadi Rani Sahal Kanwar Jayanti	17	18	19 Veer Shivaji Jayanti
20	21 Veer Bida Rathore Jayanti	22	23	24	25	26
27	28					

राव जोधा जी

राव जोधा जी का नाम आज भी मारवाड़ में सबसे अधिक सम्मान से लिया जाता है। मेवाड़ के साथ हुए संघर्ष में जहाँ एक ओर राव रणमल जी मारे गए, तो दूसरी ओर राठौड़ो की राजधानी मंडोर पर भी सिसोदियाओं का कब्ज़ा हो गया था। राव जोधा जी को भी जान बचाने के लिए जंगलों में शरण लेनी पड़ी थी। लेकिन जोधा जी के उत्साह और आत्मविश्वास में कोई कमी नहीं आई।

उसी दौरान एक और घटना घटी, जंगल में रहते समय विहंगकूट पर्वत श्रेणी की निर्जन गुफा में तपस्यारत एक सिद्ध योगी से राव जोधा जी का संपर्क हुआ और उन्होंने राव जोधा जी को प्रेरणा दी कि तुम्हें अपने नाम से एक नगर बसाना चाहिए, ताकि तुम्हारा नाम अमर हो जाए और यश कीर्ति में वृद्धि हो।
योगी की आज्ञा से जोधा जी ने मंडोर से चार मील दूर उसी विहंगकूट/ चिड़ियांकूट पर्वत की ऊंची चोटियों पर नया नगर बसाने का निश्चय किया। यह पर्वत श्रेणी ऐसी है जिसपर आसानी से कोई चढ़ नहीं सकता। चारों और के घने जंगल मानो इसके रक्षक हों, ऊंची चोटियों से आसानी से चारों और नजर रखी जा सकती है, यह सब सोचकर ही नगर निर्माण का विचार दृढ हुआ होगा। शीघ्र ही नगर बनकर तैयार हो गया, लेकिन एक और घटना घटी। जिस सिद्ध योगी की प्रेरणा से यह नगर बसाने का काम शुरू हुआ था, असावधानी वश उन्हीं की गुफा इस दौरान ढह गई। तपस्वी तो अपना चिमटा कमंडल उठाकर अन्यत्र चले गए। लेकिन जाते-जाते श्राप भी दे गए, जिसके परिणाम स्वरुप क्षेत्र पेयजल विहीन हो गया सारा पानी खारा हो गया। जोधा जी और उनके बाद उनके वंशजों ने बहुत प्रयत्न किया इस संकट के समाधान का, किन्तु समस्या से निजात नहीं मिली। जोधपुर निवासी आज भी उस ऋषि की तपस्या स्थली को आदर सहित प्रणाम करते हैं।

नव निर्मित जोधपुर शहर में राठौड़ कुल के अनेक लोग आकर बसने लगे और देखते ही देखते यह नगर राठौड़ वीरों के समूह से रक्षित हो गया। इसी दौरान राव जोधा जी ने माँ करणी जी के आशीर्वाद से मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव भी रखी। मंडोर से जोधपुर आने के पूर्व जोधा जी ने मंडोर के अग्रभाग में मरुभूमि के अनेक वीरों की प्रस्तर प्रतिमाएं स्थापित करवाई। ये सभी प्रतिमाएं घोड़े पर चढी हुई योद्धा वेश में सन्नद्ध, दाहिने हाथ में बरछे को उठाये, बाएं हाथ में घोड़े की लगाम थामे, पीठ पर ढाल और तरकस, कंधे पर धनुष, कमर में तलवार, कमरबंद में छुरी के साथ ऐसी प्रतीत होती हैं, मानो अभी जीवित होकर युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करने वाली हैं। स्थापत्य कला की इन बेजोड़ कलाकृतियों में पाबूजी राठौड़, रामदेव जी, हड़बू जी सांखला व चौहान वीर गोगा जी की मूर्तियाँ हैं।

राव जोधा जी के चौदह पुत्रों में से सबसे बड़े सांतल जी ने पिता का राज्य छोड़कर अपने भुजबल से राजस्थान के उत्तर पश्चिम में एक नया किला बनवाया – सातलमेर।
यह किला पोकरण से तीन कोस की दूरी पर स्थित है, इनका यवन राजा सराई खान से विवाद हुआ और संघर्ष में दोनों ही मारे गए। सातल जी का अंतिम संस्कार सैगो नामक स्थान पर हुआ। जोधा जी के चौथे पुत्र राव दूदा ने मेड़ता के विशाल क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया और उनके वंशज आज मैड़तिया राठौड़ के नाम से जाने जाते हैं। चित्तौड़ की रक्षा करते हुए मुगल शासक अकबर के दांत खट्टे करने वाले वीर केसरी राव जयमल जी उनके ही पौत्र थे, परम कृष्णभक्त मीराबाई भी इन्हीं दूदा जी की पौत्री थीं, जिनका विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था। जोधा जी के एक पुत्र बीदा ने मोहिलों के राज्य पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधीन किया तो छठवे पुत्र बीका ने जाटों के इलाकों पर धावा बोला। मुख्यतः कृषि पर आश्रित रहने वाले जाट लगातार होने वाले मोहिलों और भाटियों के आक्रमणों से त्रस्त रहते थे अतः मोहिलों को परास्त करने वाले राठौड़ों को उन्होंने अपना संरक्षक ही माना और एक पंचायत बुलाकर बिना किसी संघर्ष के बीका जी को राज्य सोंप दिया। बदले में बीका ने भाटियों से उनकी रक्षा करने का वचन और उनके निजी जीवन व आजीविका पर कोई प्रतिबन्ध न किये जाने का आश्वासन जाटो को दिया। इस प्रकार बीका के नाम पर उनकी नई राजधानी बीकानेर बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ। राज सिंहासन पर बैठते समय जिस पांडू ने राव बीका के मस्तक पर तिलक किया उसके वंशज ही लगातार बीकानेर के नए शासकों को तिलक करते आ रहे हैं।
बदले में राजा उन्हें पच्चीस स्वर्ण मुद्राएँ देकर सम्मानित करता।
शासक और शासित का यह स्नेह सम्बन्ध भारत के अतिरिक्त और कहाँ देखने में आएगा ?

2022
MARCH

S	M	T	W	T	F	S
		1 Mahashivratri	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18 Holi	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28 Rao Jodha Jayanti	29	30	31		

महाराणा संग्राम सिंह (सांगा)

वीर योद्धा हिंदुपत, महाराणा संग्राम सिंह जी को राणा सांगा के नाम से जाना जाता है।
जिस काल में राणा सांगा हुए उस काल में केवल दो ही बड़े हिन्दू साम्राज्य थे। छोटे-छोटे स्वाभिमानी राज्य तो बहुत थे, लेकिन दो बड़े राज्य थे जो स्वाभिमानी भी थे और शक्तिशाली भी, जिनकी सीमाएं शत्रु के आंगन तक थी।
जिनसें दिल्ली तख्त भी खोफ खाता था, एक विजय नगर साम्राज्य और दूसरा मेवाड़ का साम्राज्य।
राणा सांगा का जन्म 12 अप्रेल 1482 को हुआ था,
राणा सांगा ने अपने जीवनकाल में 100 से अधिक युद्ध लड़े थे।
जिनमे मात्र एक युद्ध में वो पराजित हुए, 15 वी सदी में हिदुस्तान के सबसे ताकतवर राजा महाराणा सांगा ही थे, तथा राणा सांगा के शरीर पर 80 से ज्यादा घाव थे।
जिसमे उन्होंने अपनी एक आंख, एक पैर और एक हाथ भी गंवा दिया था।
राणा सांगा को हिंदुपत की उपाधि प्राप्त थी, तथा राणा सांगा को सैनिक भग्नावशेष व सिपाही का अंश के उपनाम से भी जाना जाता है।
राजपुताना के एकमात्र राजा राणा सांगा ही थे जिन्होंने सम्पूर्ण राजपूतों को "पाती परवन" से संघठित किया था।
इनका राज्यभिषेक 24 मई 1509 को हुआ था।
राणा सांगा ने कालपी मध्यप्रदेश में 30 जनवरी 1528 को अपने प्राण त्याग दिए थे।
राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ में महाराणा सांगा की समाधि स्थल हैं जिसे 8 खम्भो की छत्री के नाम से भी जाना जाता है।

सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा, दिल्ली जिसके चरण चूमती, हिन्द की माटी जिस पर इठलाती, बप्पा की वो शान था, कुम्भा का वो मान था,वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
सौ युद्धों का था वो विजेता, एक में हारा फिर भी न माना, अपनों द्वारा गया जो मारा, मेवाड़ धरा का राज दुलारा, हिन्द धरा का था वो पुजारा, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा, घोड़े जिसके सिंधु जल पीते, सैनिक जिसके नर्मदे में नहाते, यमुना जिसके चरण पखारें, हिन्द का वो मान था, भारत माँ की शान था, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
बाबर का जो काल था, हसन मेवाती जिसकी ढाल था, लोधी का यमकाल था, भागा जिसके आगे अहमदाबाद था, मांडू जिसकी कैद में था, गीत जिसके गाते खानवा और खतौली है, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
जिसके जौहर से चमका हिंदुस्तान था, उस कर्णावती की वो मांग था, जन-जन की वो जान था, हिन्द का वो स्वाभिमान था, गूहिलों का अभिमान था, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
गोरा-बादल पर जो गर्वित था, प्रताप उस सांगा पर गर्वित था, पद्मिनी जिसकी माई थी, रतन सिंह उसका साई था, अल्लट - सामन्त - कुमार - जैत्र - समर - हमीर और चूंडा जिसके कुल अभिमान थे, उस सिसोदिया कुल पर उसको मान था, हिन्द उसकी जान था, हिमालय पर जिसको मान था, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
उदय - प्रताप - अमर - राज - फतेह जिनको उस पर मान था,अज्जा - सज्जा - गोकुल - नरवद - रायमल - खेतसी - रामदास - माणकचन्द - गंगा - करमचंद पृथ्वी - वीरमदे - भारमल - जोगा - उदय - रतन और मेदनी का जिसको साथ था, अस्सी घावों से सुशोभित, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।
उस राणा की गाथा मैं क्या गाऊ, गीत जिसके गाता समरांगण है, जिसमें बसे हर हिन्द वाशी के प्राण है, धरा जिसके रक्त से लाल है, आसमा जिसके पदचापों की रज से रंजीत है, आंसू बहा मैं उसके पथ को न लजाऊंगा, पी अश्रु मैं उसके गीत सदा गाऊंगा, वो राणा अमर रहेगा, वो सांगा अमर रहेगा, रण बांका अमर रहेगा।

2022
APRIL

S	M	T	W	T	F	S
					1	2 Chaitrya Navaratri
3	4	5	6	7	8	9
10 Ramnavami	11	12 Maharana Sanga Jayanti	13	14 Mahavir Jayanti	15	16
17 Chandrashekhar Singh Jayanti	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

www.dhananjaisingh.com

महाराणा प्रताप सिंह

भारत के इतिहास में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप एक ऐसे महान योद्धा थे, जिन्हें दुश्मन भी सलाम करते थे। वह मेवाड़ में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे। इतिहास में उनका नाम वीरता और साहस के लिए सदैव अमर रहेगा। वह अपनी वीरता, स्वाभिमान और युद्ध कला के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने आखिरी सांस तक मेवाड़ की रक्षा की। उनका पूरा नाम महाराणा प्रताप सिंह सिसोदिया था। उनका जन्म 9 मई 1540 को मेवाड़ के कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था। बचपन में उन्हें कीका नाम से पुकारा जाता था।

महाराणा प्रताप को भारत का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी भी कहा जाता है। युद्ध के समय महाराणा प्रताप दो तलवार रखते थे,यदि उनके दुश्मन के पास तलवार नहीं होती थी तो वह उसे अपनी एक तलवार देते थे, जिससे युद्ध बराबरी का हो सके, हल्दीघाटी युद्ध में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व महाराणा प्रताप ने किया था, हकीम खां सूरी हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लड़ने वाला एकमात्र मुस्लिम सेनापति था।

इस युद्ध को महाराणा ने अकबर की 80 हजार की मुगल सेना के खिलाफ मात्र 22 हजार की सेना के साथ बड़ी बहादुरी से लड़ा, इस युद्ध में महाराणा की सेना की विजय हुई।

यदि एक बार के लिए हल्दीघाटी युद्ध को छोड़ दिया जाए तो भी महाराणा प्रताप ने गोगुन्दा, चावण्ड, मोही, मदारिया, कुम्भलगढ़, ईडर, मांडल, दिवेर जैसे कुल 21 बड़े युद्ध जीते व 300 से अधिक मुगल छावनियों को ध्वस्त किया था।

महाराणा प्रताप के समय मेवाड़ में लगभग 50 दुर्ग थे, जिनमें से तकरीबन सभी पर मुगलों का अधिकार हो चुका था व 26 दुर्गों के नाम बदलकर मुस्लिम नाम रख दिय गए थे,जैसे उदयपुर का नाम मुहम्मदाबाद, चित्तौड़गढ़ का नाम अकबराबाद आदि, जरा सोचिए कैसे आज 500 साल बाद भी उदयपुर को हम उदयपुर के नाम से ही जानते हैं ?

ये हमें कोई नहीं बताता कि असल में इन 50 में से 2 दुर्गों को छोड़कर बाकी शेष सभी पर महाराणा प्रताप ने विजय प्राप्त करली थी व लगभग सम्पूर्ण मेवाड़ पर दोबारा अधिकार कर लिया था।

हल्दी घाटी युद्ध के 300 साल बाद भी उस जगह से तलवारें पाई गई थीं, महाराणा प्रताप 20 वर्ष तक मेवाड़ के जंगलों में घूमते रहे, परंतु स्वाभिमान के साथ कभी भी समझोता नहीं किया।

महाराणा प्रताप ने अपना खोया हुआ 85 प्रतिशत मेवाड़ फिर से जीत लिया था। उनका घोड़ा चेतक वफादारी व स्वामिभक्ति के लिए आज भी याद किया जाता है, महाराणा प्रताप के पास चेतक के साथ-साथ एक प्रिय हाथी रामप्रसाद भी था, महाराणा प्रताप ने जब महलों का त्याग किया तब उनके साथ लोहार जाति के हजारों लोगों ने भी घर छोड़ा और दिन-रात उनकी फौज के लिए तलवारें बनाईं।
महाराणा प्रताप के लिए एक प्रसिद्ध कहावत भी है,
"माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राणा प्रताप।
अकबर सूतो ओझकै, जाण सिराणै साँप।।"

2022
MAY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3 Akshaytrutiya	4 Veer Chhatrasal Bundela Jayanti	5	6	7
8	9 Maharana Pratap Jayanti	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20 ParamVir Piru Singh Jayanti	21
22	23 Maharani Gayatri Devi Jayanti	24	25 Veer Alha Jayanti	26	27	28
29	30	31				

www.dhananjaisingh.com

सम्राट पृथ्वीराज चौहान

पृथ्वीराज चौहान का नाम हर भारतीय जानता है। पृथ्वीराज चौहान एक ऐसे शूरवीर योद्धा थे, जिनके साहस और पराक्रम के किस्से भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखे गए हैं। वे आर्कषक कद-काठी के सैन्य विद्याओं में निपुण योद्धा थे। जिन्होंने अपने अद्भुत साहस से दुश्मनों को धूल चटाई थी।

उनकी वीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब मोहम्मद गोरी द्वारा उन्हें बंधक बना लिया गया था और उनसे उनकी आंखों की रोशनी छीन ली थी, तब भी उन्होंने मोहम्मद गोरी के दरबार में उसे मार गिराया था।

पृथ्वीराज चौहान के करीबी मित्र एवं कवि चंदबरदाई ने अपनी काव्य रचना "पृथ्वीराज चौहान रासो" में यह भी उल्लेख किया है कि पृथ्वीराज चौहान अश्व व हाथी नियंत्रण विद्या व शब्दभेदी बांण चलाने में भी निपुण थे।

भारतीय इतिहास के सबसे महान और साहसी योद्धा पृथ्वीराज चौहान जिनका जन्म राजपूतों में चौहान वंश के शासक सोमेश्वर और कर्पूर देवी की कोख से हुआ था।

पृथ्वीराज चौहान जब महज 11 वर्ष के थे, तभी उनके पिता सोमेश्वर की एक युद्ध में मृत्यु हो गई, जिसके बाद वे अजमेर के उत्तराधिकारी बने और एक आदर्श शासक की तरह अपनी प्रजा की सभी उम्मीदों पर खरे उतरे। इसके अलावा पृथ्वी राज चौहान ने दिल्ली पर भी अपना सिक्का चलाया।

इतिहास मे पृथ्वीराज चौहान सबसे ज्यादा मशहूर हुए थे क्योंकि वो ना केवल शूरवीर योद्धा थे बल्कि वह शब्द भेदी बाण कला के कुशल जानकार भी थे। जो केवल आवाज के आधार पर अचूकता से प्रतिस्पर्धी पे हमला करने मे सक्षम थे। उनका वार इतना सटीक होता था की उनके प्रतिस्पर्धी को क्षति पहुंचाए बगैर कभी खाली नही जाता था। इसलिए बिना देखे उन्होने मोहम्मद गौरी को शब्द बाण कला द्वारा मौत के घाट उतारा था।

कुल 16 बार पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को जीवन दान दिया था, इससे पृथ्वीराज चौहान ने अपनी उदारता और महानता का परिचय दिया था।

पृथ्वीराज चौहान से कई बार पराजित होने के बाद मुहम्मद ग़ोरी अंदर ही अंदर प्रतिशोध से भर गया था, तथा धोखे से तराईन का दूसरा युद्ध जीता एवं बंधक बनाने के बाद पृथ्वीराज चौहान को उसने कई शारीरिक यातनाएं दीं एवं पृथ्वीराज चौहान को मुस्लिम बनने के लिए भी प्रताड़ित किया।

वहीं काफी यातनाएं सहने के बाद भी वीर योद्धा पृथ्वीराज चौहान एक वीर पुरुष की तरह अडिग रहे और दुश्मन के दरबार में भी उनके माथे पर किसी भी तरह का शिकन नहीं था। इसके साथ ही वे अमानवीय कृत्यों को अंजाम देने वाले मुहम्मद ग़ोरी की आंखों में आंखे डालकर पूरे आत्मविश्वास के साथ देखते रहे।

जिसके बाद गौरी ने उन्हें अपनी आंखे नीचे करने का आदेश दिया लेकिन इस राजपूत योद्धा पर तनिक भी इसका प्रभाव नहीं पड़ा। जिसको देखकर मुहम्मद गौरी का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया और उसने पृथ्वीराज चौहान की आंखे गर्म सलाखों से फोड़ देने का आदेश दिया। यहीं नहीं आंखे फोड़ देने के बाद भी क्रूर शासक मुहम्मद गौरी उन पर कई जुल्म ढाता गया और अंत में पृथ्वीराज चौहान को जान से मारने का फैसला किया।

वहीं इससे पहले कि मुहम्मद ग़ोरी की पृथ्वीराज चौहान को मार देने की साजिश कामयाब होती, पृथ्वीराज चौहान के बेहद करीबी मित्र और राजकवि चंदबरदाई ने मुहम्मद ग़ोरी को पृथ्वीराज चौहान की शब्दभेदी बाण चलाने की खूबी बताई।

जिसके बाद ग़ोरी हंसने लगा कि एक अंधा बाण कैसे चला सकता है, लेकिन बाद में ग़ोरी अपने दरबार में तीरंदाजी प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिए राजी हो गया।

वहीं इस प्रतियोगिता में शब्दभेदी बाण चलाने के उस्ताद पृथ्वीराज चौहान ने अपने मित्र चंदबरदाई के दोहों के माध्यम से अपनी यह अद्भुत कला प्रदर्शित की और भरी सभा में पृथ्वीराज चौहान ने चंदबरदाई के दोहे की सहायता से मुहम्मद ग़ोरी की दूरी और दिशा को समझते हुए गौरी के दरबार में ही उसकी हत्या कर दी।

वहीं इसके बाद पृथ्वीराज चौहान और उनके मित्र ने अपने दुश्मनों से हाथों मरने के बजाय एक-दूसरे पर बाण चलाकर अपनी जीवनलीला खत्म कर ली।

इनके लिए एक प्रसिद्ध पंक्ति भी है

"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चुके चौहान।"

2022
JUNE

S	M	T	W	T	F	S
			1	2 Samrat Prithviraj Chouhan Jayanti	3	4
5	6	7	8	9	10	11 Ramparsad Bismil Jayanti
12	13	14	15 Rao Dudha Jayanti	16 Maharaja Hanuwant Singh Jayanti	17	18 Haldighati Victory Day
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

राव अमर सिंह राठौड़

अमर सिंह राठौड़ भारत के वो स्वाभिमानी शेर है,

जिन्होंने कभी अपने स्वाभिमान के साथ समझोता नही किया। अमर सिंह राठौड़ की भुजाओं का लोहा दिल्ली का बादशाह शाहजहां भी मानता था। जब किन्ही कारणों से आपको जोधपुर युवराज का पाटवी पद छोड़ना पड़ा, तो शाहजहां ने तत्काल अमर सिंह जी को बुलावा भेजा और नागौर का परगना दे राव की उपाधि से नवाजा। उसे पता था कि ये भुजाएं दिल्ली के तख्त को मुश्किल दौर में मजबूती दे सकती है।

अमर सिंह जी के युवराज काल के विजयी अभियानों का बादशाह स्वयं गवाह था, उसे पता था कि इन रजपूती हाथों से तलवारें केवल मौत ही छुड़वा सकती है, जीते-जी ये रजपूती तलवारें कभी थमेंगी नही। बादशाह हमेशा अमर सिंह जी के मान-सम्मान और स्वाभिमान का पूरा ख्याल रखता था, उसे पता था कि राजपूत वफादार कौम है कभी धोखा नही करेगी।

लेकिन उनके स्वाभिमान पर आंच आएगी तो मौत से भी नही डरेगी।

रणबंके राठौड़ ने दिल्ली सत्ता को कई नई ऊंचाईयां दी, और खूब सम्मान पाया यही सम्मान मुगल दरबार के अन्य दरबारियों को खटकता था। बादशाह के साले सलावत खान ने ईर्ष्या वश अमर सिंह जी के खिलाफ षड्यंत्र करने प्रारम्भ कर दिए थे। लेकिन सत्ता सुख को ठोकरों पर रखने वाले अमर सिंह जी ने सदैव रजपूती को अपनाया, लेकिन षड्यंत्रों के आगे झुके नही।

एक दिन दरबार में बादशाह के साले सलावत ने वीर अमर सिंह राठौड़ के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने का प्रयास किया तो वीर अमर सिंह जी ने भरे दरबार में बादशाह के सामने सलावत खान को मौत के घाट उतार दिया। भरे दरबार में किसी की भी हिम्मत नही हुई की उस सिंह को कोई ललकारे,बादशाह स्वयं भयभीत हो दरबार से भाग खड़ा हुआ।

उसके बाद वीर अमर सिंह आगरा से नागौर आ गए। कुछ ही दिनों बाद एक दूत संदेशा लेकर आता है कि बादशाह आपके साथ पुनः मित्रता करना चाहते हैं इसलिए आपको आगरा बुलाया है। अमर सिंह जी आगरा पहुँच गए, लेकिन वहां अमर सिंह जी के साथ धोखा हुआ और छलवंश उनकी हत्या कर दी गई। बादशाह ने मित्रता के नाम पर धोखा किया। तलवार से वीर अमर सिंह को हराने वाला कोई पैदा नही हुआ था, इसलिए मुगल सैनिकों द्वारा पीछे से वार करते हुए उनकी पीठ में कायरों ने कटार घुसा दी। उसके बाद भी घायल अमर सिंह जी ने युद्ध किया और अनेकों मुगल सैनिको को मौत के घाट उतार कर वीरगति को प्राप्त हुए और इसी के साथ उनका नाम इतिहास में सदेव के लिए अमर हो गया।

2022
JULY

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6 General Hanut Singh Jayanti	7	8 Maharaja Ummaid Singh Jayanti	9
10	11	12	13	14	15 Mirja Raja Jai Singh Jayanti	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25 Rao Amarsinh Rathod Battle Day	26	27	28	29	30 Narayan Singh Reda Jayanti
31						

www.dhananjaisingh.com

वीर दुर्गादास राठौड़

हम चांहे तो वीर दुर्गादास जी के जीवन के एक-एक पहलू पर असंख्य काव्यों की रचना कर सकते है लेकिन फिर भी उस बलिदानी के बलिदान का कोई न कोई अध्याय अवश्य ही छूट जाएगा।

बात कर रहे है मारवाड़ के एक ऐसे धर्मी सपूत के बारे में जो न तो सामंत थे, न ही जमीदार थे, न ही लम्बरदार और न ही राज के हकदार थे। लेकिन उस वीर सपूत का नाम सुनते ही दिल्ली में बैठे औरंगजेब की भी धड़कन बढ़ जाती थी।

उस वीर सपूत के नाम आज भी एक दोहा प्रसिद्ध है,

"माई ऐहडा पूत जण, जेहड़ा दुर्गादास।
मार मण्डासै थामियौ, बिन थांबा आकाश।।"

हम बात कर रहे है राष्ट्रनायक वीर दुर्गादास राठौड़ जी के बारे में। 13 अगस्त 1638 को करणोत राठौड़ आसकरण जी के घर नेतकंवर भटियाणी जी की कोख से दुर्गादास जी का जन्म हुआ।

वीरांगना भटियाणी जी ने दुर्गादास को तलवारबाजी, घुड़सवारी, युद्धकला, स्वामिभक्ति और रजपूती के गुण सिखाये, वीरता और निडरता के संस्कार भी कूट-कूट के भरे।

एक दिन अपने गाँव लुणावा में अपने खेतों की तरफ जाते समय दुर्गादास जी ने देखा कि कुछ राजसैनिक गरीब किसानों की लहराती फसलो में अपने ऊंटों को चरा रहे हैं। बेचारे कलपते किसान उनसे गुजारिश कर रहे हैं कि मालिक ऐसा जुल्म न करो।

रेगिस्तान में वैसे ही थोड़ी सी खेती की जमीन है और ऊपर से उसकी उपज भी अगर इस तरह आँखों के सामने बर्बाद होती दिखे, तो किसका दिल नहीं रोयेगा ? लेकिन सैनिक नहीं रुके, उल्टे वे किसानों का मजाक उड़ाने लगे, दुर्गादास जी से यह अन्याय सहन नहीं हुआ और उन्होंने उन सैनिकों को रोकने का प्रयत्न किया। लेकिन नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता ?

दुर्गादास जी जितना उन्हें समझाने का प्रयत्न करते, उतना ही वे एंठते जाते, क्रोधित दुर्गादास जी ने आगे बढ़कर एक ऊँट की गर्दन पर तलवार दे मारी, एक ही वार में गर्दन धड़ से अलग कर दी। एक सैनिक ने जब दुर्गादास जी पर वार किया, तो चतुरता से दुर्गादास जी स्वयं बच गए, किन्तु उनके प्रहार ने उस सैनिक का भी वही हश्र किया जो ऊँट का हुआ था। यह देख बाक़ी सैनिकों ने वहां से भाग निकलने में ही भलाई समझी।

बात राजदरबार तक गई तो दुर्गादास जी को तलब किया, साहसी दुर्गादास जी ने सारी घटना का बखान ज्यूं का त्यूं महाराजा को सुना दिया, कहा कि राजा तो प्रजा का पालक होता है, अगर उसके अधीनस्थ लोग ही जनता को सताने लगें तो वे तो राज्य के अपराधी ही हुए। मैंने अन्यायी को उसके अपराध का दण्ड दिया है, अगर मैं ऐसा न करता तो आज आपके सामने जवाब देने को जीवित कहाँ बचता ? साथ आये ग्रामीणों ने भी दुर्गादास जी का समर्थन किया।

महाराजा जसवंत सिंह ने इस हीरे को पहचान लिया और दुर्गादास जी को अपनी निजी सेवा में रख लिया, इतना ही नहीं कुछ समय बाद अपने बड़े बेटे पृथ्वीसिंह को शस्त्र संचालन सिखाने का दायित्व भी सोंप दिया।

उस समय औरंगजेब ने भी दोस्त बनकर राजस्थान के शूरमाओं की पीठ में खंजर घोंपे, पहले तो जोधपुर रियासत के इकलौते वारिस कुंवर प्रथ्वी सिंह को जहरबुझी पोशाक पहनाकर उनकी हत्या कर दी तथा उसके बाद महाराजा जसवंत सिंह जी को भी 28 नवंबर 1678 को काबुल में जहर देकर मरवा डाला। अब उसका अगला निशाना थीं महाराजा जसवंत सिंह की गर्भवती रानियाँ, जो काबुल में ही थीं, लेकिन उनकी रक्षार्थ कोई ढाल बनकर सामने थे वो दुर्गादास राठौड़ थे।

औरंगजेब ने अजमेर के नवाब इफ्तिखार खान को आदेश दिया कि वह नेतृत्वविहीन मारवाड़ पर कब्जा कर ले, किन्तु उसने यह जितना आसान समझा था वह उससे उतना ही कठिन निकला। राजपूत सरदारों ने कदम-कदम पर प्रतिरोध किया और उन्होंने मुगलों के दांत खट्टे कर दिए थे।

उधर बहुत कुशलता पूर्वक दुर्गादास जी व बुजुर्ग सेनानायक शोनीग जी गर्भवती रानियों को काबुल से निकालकर लाहौर ले आये। जहाँ महारानी जस कंवर जी ने बालक अजीत सिंह को तथा नरूकी महारानी ने बालक दलथम्भन को जन्म दिया, बालक दलथम्भन की जन्म के कुछ ही दिनो के अन्दर मृत्यु हो गईं।

औरंगजेब ने फिर एक चाल चली, उसने राजपूत सरदारों से कहा कि अजीत सिंह और रानियों को दिल्ली लाओ, वह स्वयं अपने हाथों से खिलअत प्रदान कर उनका राज्य उन्हें सोंपेगा। दुर्गादास जी न चाहते हुए भी अन्य सरदारों के जोर देने पर रानियाँ व अजीत सिंह को लेकर दिल्ली पहुंचे तथा वहां उनको नूरगढ़ के रूपसिंह की हवेली में ठहराया गया।

दुर्गादास जी को बादशाह पर रत्ती भर भी भरोसा नहीं था, अतः उन्होंने राजकुमार को बचाने की योजना बनाई, उस समय रूप सिंह जी की हवेली पर बलूंदा के ठाकरे मोकम सिंह की ठकुरानी बाघेली जी भी ठहरी हुए थी तथा उनके अजीत सिंह जी के हमउम्र की बेटी थी, जब उनको औरंगजेब की साजिश का पता तो उन्होंने अपनी बेटी को अजीत सिंह के स्थान पर रख कर अजीत सिंह को सकुशल दिल्ली से बाहर लेकर निकाला।

दूसरे ही दिन फौजदार फौलाद खान ने हवेली पर हमला कर दिया, रानियों व अन्य वीरांगनाओं ने स्वयं अपने सीने में कटार मारकर दिव्यपथ का मार्ग पकड़ा, तो राजपूत सेनानी जान हथेली पर लेकर जूझने बाहर निकले पड़े। मुट्ठीभर वीरों ने बड़ी बहादुरी से कड़ा मुकाबला किया। दुर्गादास जी भी घायल तो हुए किन्तु सकुशल अपने पैतृक गाँव सालावास पहुँच गए, जहां अजीतसिंह पहले ही पहुंचाए जा चुके थे।

शीघ्र ही पूरे मारवाड़ में यह कहानियाँ फ़ैल गई, दुर्गादास जी राठौड़ अब जननायक बन चुके थे, उनके प्रयत्नों से चिर प्रतिद्वंदी मेवाड़ और मारवाड़ एक होकर मुगलों से लोहा लेने लगे थे। औरंगजेब के महत्वाकांक्षी बेटे अकबर को अपने साथ मिलाकर दुर्गादास ने मानो उसकी कमर ही तोड़ दी थी। उधर दक्षिण में सांभाजी के साथ पहली बार राजस्थान ने मिलकर पूरे देश में मुग़ल सल्तनत को चुनौती दी थी।

अंत में महाराजा अजीत सिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बिठा कर दुर्गादास जी मालवा के उज्जैन में आकर भक्ति में लीन हो गए तथा वहीं क्षिप्रा नदी के किनारे ही अपनी अंतिम सांसे ली।

युगपुरुष पूज्य तनसिंह जी री कलम बार बार नमन करते हुए लिखती है, "मेरे वीर दुर्गादास लौट के आ, लौट के आ"।।

2022 AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
	1	2 Nagpanchami	3	4	5 Rao Bika Jayanti	6
7	8	9	10	11 Raksha Bandhan	12	13 Veer Durgadas Rathore Jayanti
14	15 independence day	16	17	18	19 Janmasthami	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30 Ganesh chaturthi	31			

www.dhananjaisingh.com

मरण नै मेडतिया अर राज करण नै जौधा।
"मरण नै दुदा अर जान में उदा।।
उपरोक्त में मेड़तिया राठौड़ों को आत्मोत्सर्ग में अग्रण्य तथा युद्ध कौशल में प्रवीण मानते हुए मृत्यु को वरण करने के लिए आतुर कहा गया है, मेड़तिया राठौड़ों ने शौर्य और बलिदान के एक से एक बड़े कीर्तिमान स्थापित किए है और इनमे राव जयमल जी का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

राव जयमल जी का जन्म आश्विन शुक्ल ११ वि.स.१५६४ 17 सितम्बर 1507 शुक्रवार के दिन हुआ था। सन 1544 में जयमल जी ने 36 वर्ष की आयु में अपने पिता राव वीरमदेव की मृत्यु के बाद मेड़ता की गद्दी संभाली। पिता के साथ अनेक विपदाओं व युद्धों में सक्रिय भाग लेने के कारण जयमल जी में बड़ी-बड़ी सेनाओं का सामना करने की सूझ विकसित हो चुकी थी, उनका व्यक्तित्व निखर चुका था और जयमल जी मेड़तिया राठौड़ों में सर्वश्रेष्ठ योद्धा बने।

अकबर द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण का समाचार सुन जयमल जी चित्तौड़ पहुँच गये। 23 अक्टूबर 1567 को अकबर चित्तौड़ के पास नगरी नामक गांव पहुँच गया, जिसकी सूचना महाराणा उदय सिंह को मिल चुकी थी और युद्ध परिषद् की राय के बाद चित्तौड़ के महाराणा उदय सिंह ने वीर जयमल जी को 8000 सैनिकों के साथ चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा का जिम्मा दे स्वयं दक्षिण में पहाडों में चले गए थे।

विकट युद्धों के अनुभवी जयमल जी ने खाद्य पदार्थो व शस्त्रों का संग्रह कर युद्ध की तैयारी प्रारंभ कर दी, उधर अकबर ने चित्तौड़ की सामरिक महत्व की जानकारियां इक्कठा कर अपनी रणनीति तैयार कर चित्तौड़ दुर्ग को विशाल सेना के साथ घेर लिया और दुर्ग के पहाड़ में नीचे सुरंगे खोदी जाने लगी,ताकि उनमे बारूद भरकर विस्फोट कर दुर्ग के परकोटे उड़ाए जा सकें। दोनों और से भयंकर गोलाबारी शुरू हुई तोपों की मार और सुरंगे फटने से दुर्ग में पड़ती दरारों को जयमल जी रात्रि के समय फ़िर मरम्मत करा देते।
अनेक महीनों के भयंकर युद्ध के बाद भी कोई परिणाम नही निकला, चित्तौड़ के रक्षकों ने मुग़ल सेना के इतने सैनिकों और सुरंगे खोदने वालो मजदूरों को मारा कि लाशों के अम्बार लग गए, बादशाह ने किले के नीचे सुरंगे खोद कर मिट्टी निकालने वाले मजदूरों को एक-एक मिट्टी की टोकरी के बदले एक-एक स्वर्ण मुद्राए दी ताकि कार्य चालू रहे।
अबुलफजल ने लिखा कि इस युद्ध में मिट्टी की कीमत भी स्वर्ण के सामान हो गई थी, बादशाह अकबर जयमल जी के पराकर्म से भयभीत व आशंकित भी थे सो उसने राजा टोडरमल के जरिये जयमल जी को संदेश भेजा कि आप राणा और चित्तौड़ के लिए क्यों अपने प्राण व्यर्थ गवां रहे हो, चित्तौड़ दुर्ग पर मेरा कब्जा करा दो मै तुम्हे तुम्हारा पैतृक राज्य मेड़ता और बहुत सारा प्रदेश भेंट कर दूंगा। लेकिन जयमल जी ने अकबर का प्रस्ताव साफ ठुकरा दिया कि मैं राणा और चित्तौड़ के साथ विश्वासघात नही कर सकता और मेरे जीवित रहते तुम किले में प्रवेश नही कर सकते।
जयमल ने टोडरमल के साथ जो संदेश भेजा जो कवित रूप में इस तरह प्रचलित है,
"है गढ़ म्हारो म्है धणी, असुर फ़िर किम आण,
कुंच्यां जे चित्रकोट री, दिधी मोहिं दीवाण।
जयमल लिखे जबाब यूँ, सुनिए अकबर शाह,
आण फिरै गढ़ उपरा, पडियो धड पातशाह।।"

एक रात्रि को अकबर ने देखा कि किले कि दीवार पर हाथ में मशाल लिए जिरह वस्त्र पहने एक सामंत दीवार मरम्मत का कार्य देख रहा है, तभी अकबर ने अपनी संग्राम नामक बन्दूक से गोली दाग दी जो उस सामंत के पैर में जा लगी, वो सामंत कोई और नही ख़ुद जयमल जी मेडतिया ही थे। थोडी ही देर में किले से अग्नि कि ज्वालाये दिखने लगी ये ज्वालाये जौहर की थी।

जयमल जी की जांघ में गोली लगने से उनका चलना दुर्भर हो गया था, उनके घायल होने से किले में हा हा कार मच गया, अतः साथी सरदारों के सुझाव पर जौहर व केसरिया करने का निर्णय लिया गया। जौहर क्रिया संपन्न होने के बाद घायल जयमल जी कल्ला राठौड़ के कंधे पर बैठकर चल पड़े रणचंडी का आव्हान करने। जयमल जी के दोनों हाथो की तलवारों ने बिजली के सामान चमकते हुए शत्रुओं का संहार किया उसके शौर्य को देख कर अकबर भी आश्चर्यचकित था।

इस प्रकार यह वीर चित्तौड़ की रक्षा करते हुए दुर्ग की हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए जहाँ उनकी याद में स्मारक बना हुआ है।
इस युद्ध में वीर जयमल जी और पत्ता सिसोदिया की वीरता ने अकबर के हृदय पर ऐसी अमित छाप छोड़ी कि अकबर ने दोनों वीरों की हाथी पर सवार पत्थर की विशाल मूर्तियाँ बनाई, जिनका कई विदेशी पर्यटकों ने अपने लेखो में उल्लेख किया है। यह भी प्रसिद्ध है कि अकबर द्वारा स्थापित इन दोनों की मूर्तियों पर निम्न दोहा अंकित था।
"जयमल बड़ता जीवणे, पत्तो बाएं पास।
हिंदू चढिया हथियाँ, चढियो जस आकाश।।"
हिंदू,मुसलमान,अंग्रेज,फ्रांसिस,जर्मन,पुर्तगाली आदि अनेक इतिहासकारों ने जयमल जी के अनुपम शौर्य का वर्णन किया है।

वीर जयमल मेड़तिया

2022
SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5 Rao Jaita Jayanti	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17 Veer Jaimal Mertiya Jayanti
18	19	20	21	22	23	24
25	26 Sharad Navaratri	27	28	29	30	

www.dhananjaisingh.com

सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार

आर्यवर्त भारत का अतीत बहुत उज्ज्वल है और आदिकाल से ही भारत विश्वगुरु रहा है। ऋषि मुनियों द्वारा लिखित धर्मशास्त्र और धार्मिक ग्रन्थ, भारतीय संस्कृति और मान्यताएं विश्व में अपनी अलग पहचान लिए हुए है।

जब विदेशी इतिहासकारों ने अपनी मर्जी से कलम चलाई तो भारत के गौरवशाली इतिहास को तोड़ मरोड़ कर दुनिया के सामने रखा। विदेशी इतिहासकारों ने भारत के कई शूरवीरों को इतिहास में जगह ही नहीं दी खासकर मुगलकाल में यह सबसे अधिक हुआ। अफसोस कि बात तो य़ह है कि सातवीं शताब्दी से लेकर बाहरवी शताब्दी तक का पाँच सौ सालों का सुनहरा इतिहास ही गायब है।
इतिहास शोध की चीज है तथा आज के इतिहासकारों को इस विषय पर गौर भी करना चाहिए।
रघुकुल भूषण, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के छोटे भाई सुमित्रानंदन वीर लक्ष्मण जी से प्रतिहार राजपूतों की उत्पति हुई है। प्रतिहार और पड़िहार दोनों एक ही है, लेकिन लिखित में प्रतिहार व बोलचाल की भाषा मे पड़िहार कहा जाता है।
प्रतिहार वंश का इतिहास बहुत ही गौरवशाली है, इस कुल के कई राजाओं ने सैकड़ो वर्षो तक भारत भूमि की विधर्मियों से रक्षा की। भारतखंड प्रतिहारो का हमेशा ऋणी रहेगा क्योंकि प्रतिहारो ने अपने शीश दान करके माँ भारती की लाज रखी थी।

इस कुल में नागभट्ट,मिहिरभोज, वत्सराज, महेंद्रपाल, विराजदेव जैसे कई शूरवीर हुए जिन्होंने भारत भूमि और सनातनी संस्कृति की रक्षा की।
बात करते हैं प्रतिहार वंश के सबसे महापराक्रमी सम्राट मिहिरभोज जी की जिन्होंने इस धरती पर चारों तरफ राज किया था। सम्राट मिहिरभोज जी का जन्म 816 ईस्वी में सूर्य भगवान की उपासना के बाद राजा रामभद्र की महारानी अप्पादेवी की कोख से हुआ था। सम्राट मिहिरभोज का 18 अक्टूबर 836 ईस्वी में 20 वर्ष की आयु में कन्नौज के सिंहासन पर राजतिलक हुआ।
मिहिरभोज को कई उपाधियों से जाना जाता हैं, भोजराज, भोजदेव, मिहिर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज, आदिवराह, प्रभास आदि।

मिहिरभोज की महारानी का नाम चंद्रभट्टारिका और पुत्र का नाम महेन्द्रपाल था। सम्राट मिहिरभोज ने सन् 836 से 885 तक के अपने 50 वर्षो के शासनकाल में मुल्तान से पश्चिम बंगाल और कश्मीर से कर्नाटक तक सम्पूर्ण भारत पर अपना राज किया था।
सम्राट मिहिरभोज भारत के वो मजबूत स्तम्भ थे जिन्होंने 50 वर्ष तक अरबी और तुर्की आक्रमणकारियों को भारत भूमि पर पांव तक नहीं रखने दिया। मिहिरभोज के शासनकाल में भारत सोने की चिड़िया कहलाता था,
अरबी यात्री सुलेमान ने अपनी पुस्तक "सिलसिला-उर-तारिका" में लिखा है कि सम्राट मिहिरभोज की विशाल सेना में हजारों ऊंट, घोड़े, हाथी और लाखों बख्तरबंद सिपाही थे।

सम्राट मिहिरभोज के समय भारत भूमि पर सोना, चांदी, हीरों की खदाने थी, चोरी व अपराध का कोई नाम-ओ-निशान नहीं था, चारों तरफ सुख-शांति थी, लेन-देन के लिए वराह चिन्ह के चांदी के सिक्के चलते थे।
सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार को गुप्तवंशी सम्राट समुद्रगुप्त और मौर्यवंशी सम्राट चन्द्रगुप्त के बराबर माना गया। सम्राट मिहिरभोज ने 40 युद्ध कर विधर्मियों का नाश किया व भारत भूमि से दूर खदेड़ा।
सम्राट मिहिरभोज के शासन के समय धर्म, संस्कृति, योग, दर्शन, विज्ञान, आध्यात्मिकता, संगीत, स्थापत्य कला, आयुर्वेद, सामाजिक समरसता और वसुधैव कुटुंबकम की धारणा का बहुत विकास हुआ।
सम्राट मिहिरभोज से मुस्लिम हमलावर थर-थर कांपते थे और उन म्लेच्छों को वराह नाम से ही घृणा हो गयी थी।

जिस तरह भगवान विष्णु ने वराह अवतार धारण करके हिरण्याक्ष राक्षस को मार धरती की रक्षा की उसी तरह मिहिरभोज ने म्लेच्छों को मार धरती की रक्षा की, इसीलिए कई इतिहासकारों ने सम्राट मिहिरभोज को आदिवराह नाम की उपाधि भी दी।
पचास वर्षो तक शासन करने के बाद सम्राट मिहिरभोज ने सन् 885 में अपना राजपाट कुंवर महेन्द्रपाल प्रतिहार को सौप कर सन्यास ले लिया और योग साधना व उपासना करते हुए सन् 888 में देवलोक हुए।
मंडोर, जालोर, कन्नौज, उज्जैन, ग्वालियर, नागौद के शिलालेख प्रतिहार वंश के सूर्यवंशी क्षत्रिय राजपूत होने की गवाही देते है।

2022
OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5 Rani Durgavati Jayanti Rao Shekha Jayanti Dashhara	6	7	8
9 Meera Bai Jayanti	10	11	12	13 Maharaja Ganga Singh Jayanti Karva Chhauth	14	15
16	17 Aayuwan Singh Hudeel Jayanti	18 Samrat Mihirbhoj Pratihar Jayanti	19	20	21	22
23 Dhanteres	24 Diwali	25	26	27	28	29
30 Chhatpuja	31					

www.dhananjaisingh.com

भक्तशिरोमणि मीरा बाई

महान कृष्ण भक्त मीरा बाई एक मध्यकालीन हिन्दू आध्यात्मिक कवयित्री और कृष्ण भक्त थीं। वे भक्ति आन्दोलन के सबसे लोकप्रिय भक्ति-संतों में एक थीं। भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित उनके भजन आज भी उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं और श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। मीरा का जन्म राजस्थान के मेड़ता राजघराने में हुआ था, मीरा बाई के जीवन के बारे में तमाम पौराणिक कथाएँ और किवदंतियां प्रचलित हैं। ये सभी किवदंतियां मीरा बाई की बहादुरी की कहानियां कहती हैं और उनके कृष्ण प्रेम और भक्ति को दर्शाती हैं।

इनके माध्यम से यह भी पता चलता है की किस प्रकार से मीरा बाई ने सामाजिक और पारिवारिक दस्तूरों का बहादुरी से मुकाबला किया और कृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति में लीन हो गयीं।

भारतीय परंपरा में भगवान् कृष्ण के गुणगान में लिखी गई हजारों भक्तिपरक कविताओं का सम्बन्ध मीरा के साथ जोड़ा जाता है,पर विद्वान ऐसा मानते हैं कि इनमें से कुछ कविताएं ही मीरा बाई द्वारा रचित थीं बाकी की कविताओं की रचना 18वीं शताब्दी की प्रतीत होती है। ऐसी ढेरों कविताएं जिन्हें मीरा बाई द्वारा रचित माना जाता है, दरअसल उनके प्रसंशकों द्वारा लिखी मालूम पड़ती हैं। ये कविताएं 'भजन' कहलाती हैं और उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं।

मीरा बाई का जन्म राजस्थान मे मेड़ता के राजपरिवार में सन् 1498 में हुआ था।
मीरा बाई मेड़ता के शासक राव दूदा जी की पौत्री व रतन सिंह मेड़तिया पुत्री थी।
मीरा बाई अपने माता-पिता की इकलौती संतान थीं और जब वे छोटी बच्ची थीं तभी उनकी माता का निधन हो गया था। उन्हें संगीत, धर्म, राजनीति और प्राशासन जैसे विषयों की शिक्षा दी गयी। मीरा बाई का लालन-पालन उनके दादा राव दूदा जी की देख-रेख में हुआ जो भगवान् विष्णु के अनन्य उपासक थे और एक योद्धा होने के साथ-साथ भक्त-हृदय भी थे इसलिए साधु-संतों का आना-जाना इनके यहाँ लगा ही रहता था। इस प्रकार मीरा बाई बचपन से ही साधु-संतों और धार्मिक लोगों के सम्पर्क में आती रहीं।

मीरा बाई का विवाह राणा सांगा के पुत्र और मेवाड़ के राजकुमार भोजराज के साथ सन 1516 में संपन्न हुआ। उनके पति भोजराज दिल्ली सल्तनत के शाशकों के साथ एक संघर्ष में सन् 1518 में घायल हो गए और इसी कारण सन् 1521 में उनकी मृत्यु हो गयी। उनके पति के मृत्यु के कुछ वर्षों के अन्दर ही उनके पिता और ससुर भी मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के साथ युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए।

इतने दुखों के बाद धीरे-धीरे वे संसार से विरक्त हो गयीं और साधु-संतों की संगति में कीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं।

पति के मृत्यु के बाद इनकी भक्ति दिनों-दिन बढ़ती गई,
ऐसा माना जाता है कि सन् 1533 के आसपास मीरा बाई को राव जयमल जी ने मेड़ता बुला लिया। मीरा बाई के चित्तौड़ त्यागने के अगले साल ही सन् 1534 में गुजरात के बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर कब्ज़ा कर लिया था।

सन् 1538 मीरा बाई ब्रज की तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ीं, सन् 1539 में मीरा बाई वृंदावन में रूप गोस्वामी से मिलीं, वृंदावन में कुछ साल निवास करने के बाद मीरा बाई सन् 1546 के आस-पास द्वारका चली गईं।

वह अपना अधिकांश समय कृष्ण के मंदिर और साधु-संतों व तीर्थ यात्रियों से मिलने तथा भक्ति पदों की रचना करने में व्यतीत करती थीं। बहुत दिनों तक वृन्दावन में रहने के बाद मीरा द्वारिका चली गईं जहाँ सन् 1560 में वे भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति में ही समा गईं।

2022
NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3 Sawai Jai Singh Jayanti	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21 ParamVir Yadunath Singh Jayanti	22	23	24	25	26
27	28 Maharawal Raghunath Singh Jayanti	29	30			

www.dhananjaisingh.com

रानी पद्मिनी

जौहर की गाथाओं से भरे पृष्ठ भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं,
ऐसे अवसर एक नहीं, कई बार आये हैं, जब राजपूत वीरांगनाओं ने अपनी पवित्रता की रक्षा के लिए ‘जय हर-जय हर’ कहते हुए हजारों की संख्या में सामूहिक अग्नि स्नान किया था यही उद्घोष आगे चलकर ‘जौहर’ बन गया। जौहर की गाथाओं में सर्वाधिक चर्चित प्रसंग चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का है, जिन्होंने 26 अगस्त, 1303 को 16,000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया था।

पद्मिनी का मूल नाम पद्मावती था, रानी पद्मिनी की सुंदरता की ख्याति अलाउद्दीन खिलजी ने भी सुनी थी, वह भी किसी भी तरह रानी पद्मिनी को पाना चाहता था, इसलिए वह चित्तौड़ पर आक्रमण करने के लिए सेना सहित मेवाड़ की तरफ कूच करता है, लेकिन जब उसे रावल रतन सिंह व उनके सेनापति गौरा की वीरता के बारे में पता चलता है तो वह समझ जाता है कि रावल रतन सिंह की सेना को युद्ध में हरा पाना तो असंभव है, इसलिए वह रावल रतन सिंह के पास मित्रता का प्रस्ताव भेजता है तथा उन्हें दावत पर आमंत्रित करता है। रावल रतन सिंह आमंत्रण को स्वीकार कर उसके शिविर पहुँचते हैं, लेकिन वापसी के समय उनको छलवंश बंदी बना कर अलाउद्दीन अपने साथ दिल्ली ले जाता है। अब यह शर्त रखी गयी कि यदि पद्मिनी अलाउद्दीन के पास दिल्ली आ जाए तो रावल रतन सिंह को छोड़ दिया जाएगा।

यह समाचार पाते ही चित्तौड़ में हाहाकार मच गया पर पद्मिनी ने हिम्मत नहीं हारी, उसने कांटे से ही कांटा निकालने की योजना बनाई और अलाउद्दीन के पास समाचार भिजवाया गया कि पद्मिनी रानी अकेले नहीं आएंगी,उनके साथ पालकियों में 800 सखियां और सेविकाएं भी आएंगी।
अलाउद्दीन और उसके साथी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए, उन्हें लगा की रानी पद्मिनी के साथ 800 हिन्दू युवतियां अपने आप ही मिल रही है। पर उधर पालकियों में रानी पद्मिनी और उनकी सखियों की जगह गौरा-बादल के सहित सशस्त्र राजपूत वीर योद्धा बैठाये गये तथा हर पालकी को चार कहारों ने उठा रखा था, वे सभी भी कुशल वीर सैनिक ही थे।

पहली पालकी के दिल्ली में पहुंचते ही रावल रतन सिंह को उसमें बैठाकर वापस चित्तौड़ भेज दिया गया।
उसके बाद सभी वीर राजपूत योद्धा जो पालिकाओं के साथ व उनके अंदर थे, उन सभी वीरों ने अपने-अपने शस्त्र निकाले और खिलजी की सेना पर बिजली के समान टूट पड़े।

कुछ ही देर में दिल्ली के किले में हजारों शत्रु सैनिकों को यमलोक पहुँचाकर गौरा,बादल सहित सेंकड़ों मेवाड़ी वीर वीरगति को प्राप्त हुए। इससे बौखलाकर अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमला बोल दिया।
सभी राजपूत सरदारों ने साके का निर्णय लिया। सभी क्षत्रिय वीरो ने रावल रतन सिंह नेतृत्व में केसरिया किया तथा 16000 क्षत्राणियों ने रानी पद्मिनी के नेतृत्व में जौहर किया।
एक तरफ युद्ध क्षेत्र में रावल रतन सिंह के नेतृत्व में मेवाड़ी वीर खिलजी सेना का भीषण रक्तपात करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। दूसरी तरफ किले के अंदर सुन्दर जौहर कुंड तैयार किया गया,रानी पद्मिनी सहित सभी क्षत्राणियों ने सम्पूर्ण श्रृंगार किया तथा ‘जय हर-जय हर’ का उद्घोष करते हुए जौहर कुंड में अग्निस्नान कर सदा-सदा के लिए अमर हो गई।

2022
DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
				1 ParamVir Major Shaitan Singh Jayanti	2	3
4 Kalyan Singh Kalvi Jayanti	5 Rao Maldev Jayanti	6	7 ParamVir Govind Singh Jayanti	8 Rao Karmsi Jayanti	9	10
11 Veer Amar Singh Rathore Jayanti	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21 Raja Maan Singh Jayanti	22 Shri Kshatriya Yuvak Sangh Foundation Day	23	24
25	26	27	28	29	30	31